इकाई - 5

खुला आसमान

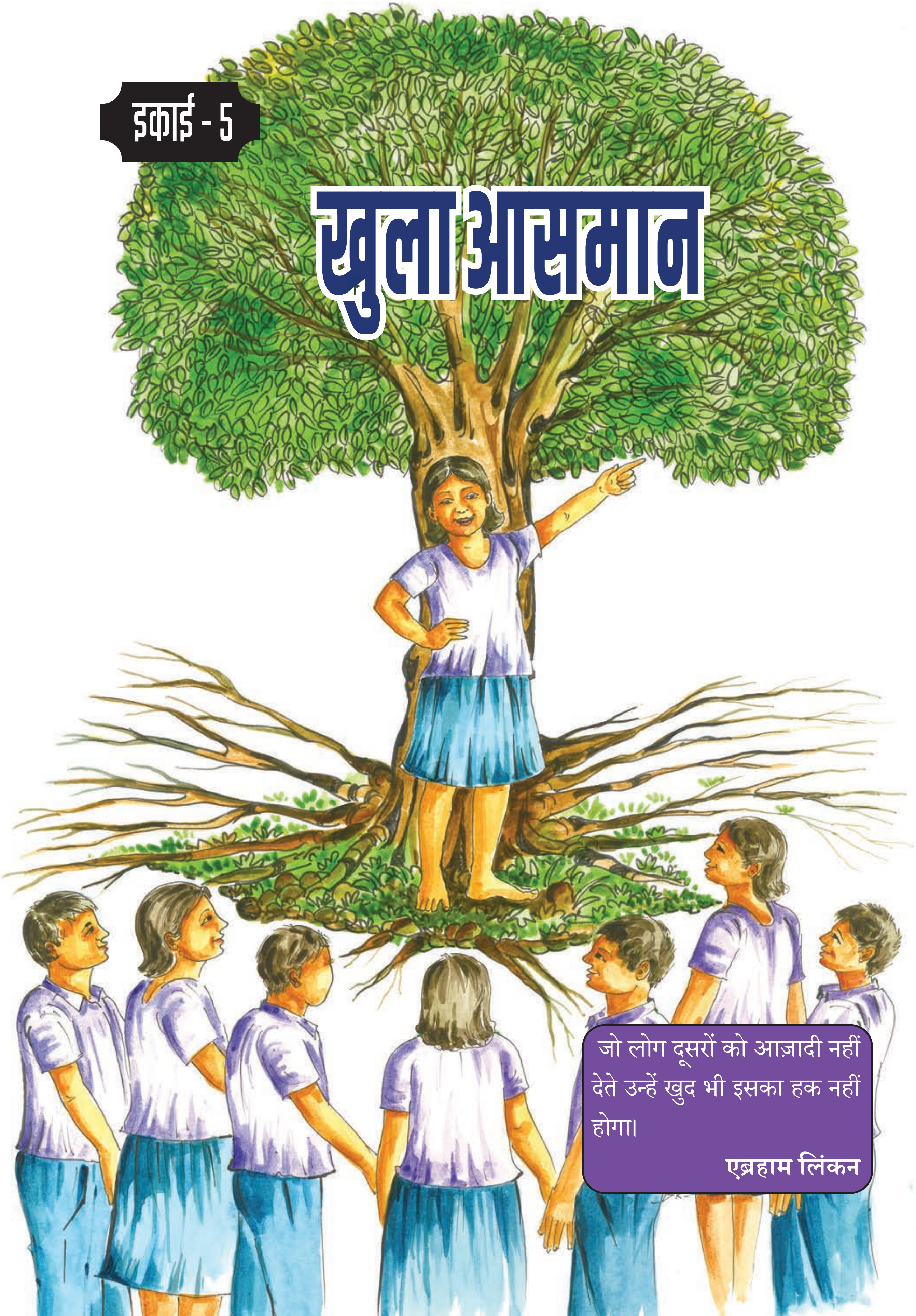

जो लोग दूसरों को आज़ादी नहीं देते उन्हें खुद भी इसका हक नहीं होगा।

एब्रहाम लिंकन

देखें, बच्चे क्या करते हैं :

चलें, हम भी खेलें।

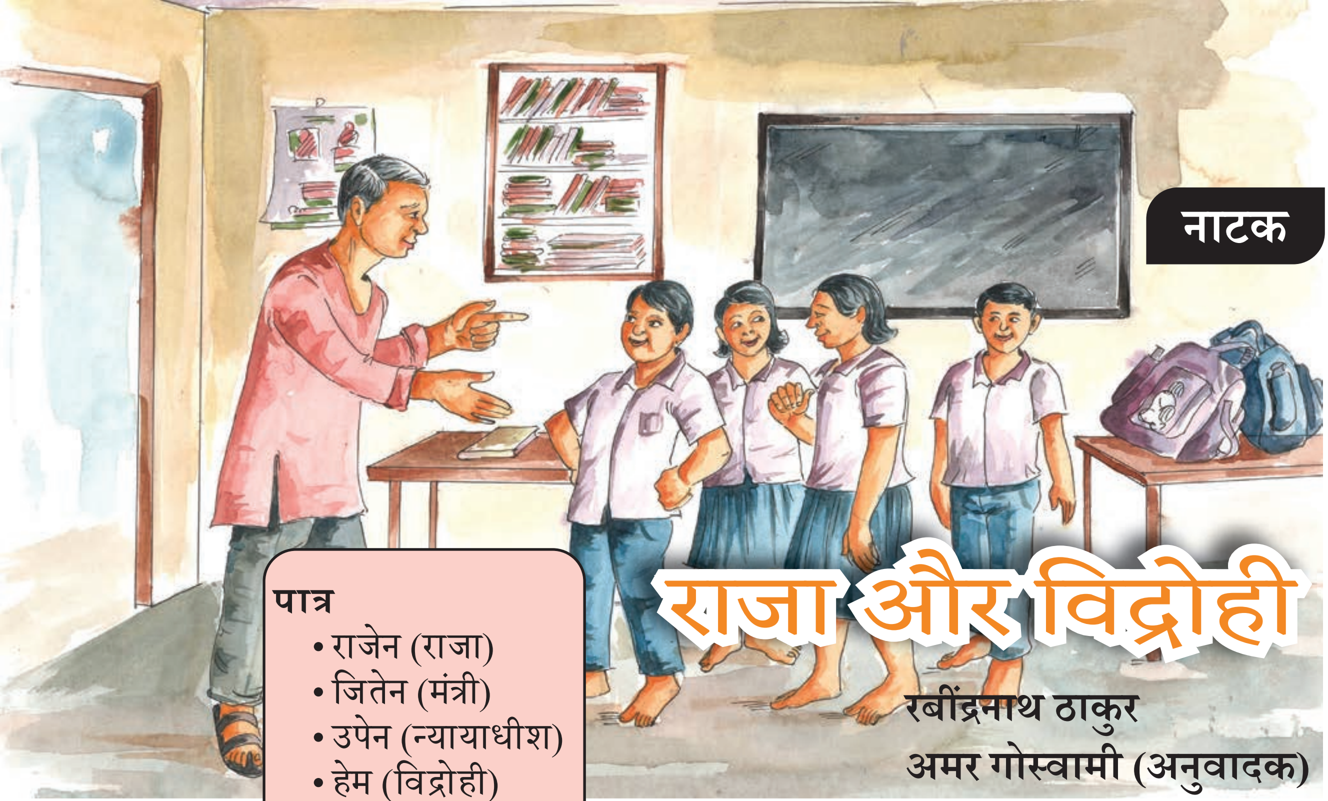

नाटक

राजा और विद्रोही

रबींद्रनाथ ठाकुर
अमर गोस्वामी (अनुवादक)

पात्र
- राजेन (राजा)
- जितेन (मंत्री)
- उपेन (न्यायाधीश)
- हेम (विद्रोही)
- सेनापति
- सैनिक
- कुछ जनता
- मति

(पहला दृश्य)

राजेन : मैं तुम लोगों का राजा हूँ।
हेम : तुम राजा! मगर क्यों?
राजेन : क्योंकि मैं तुम सबसे बड़ा हूँ।
हेम : मगर सिर्फ इसी बात से साबित नहीं होता कि तुम सबसे बलवान भी हो।

सबसे बलवान राजा बनेगा। इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

राजेन : क्या मेरी ताकत सबसे ज्यादा नहीं है? चलो, लड़ लें।
हेम : ठीक है।
राजेन : मैं तुम्हारा जबड़ा तोड़ दूँगा।
हेम : तुम्हारी नाक का भुर्ता बना दूँगा।
राजेन : तुम्हारी बत्तीसी तोड़ दूँगा।
(मति का प्रवेश)
मति : अरे, यह क्या! तुम लोग इस तरह झगड़ा क्यों कर रहे हो?
हेम : राजेन कहता है वह राजा बनेगा। वह खुद को सबसे बलवान मानता है। मगर मैं ऐसा नहीं समझता।
मति : यह सिर्फ़ खेल है। राजेन के राजा बनने में हर्ज क्या है? बाद में तुम्हारी भी राजा बनने की बारी आएगी। जय महाराज राजेंद्र की जय। अब बताइए, आप मंत्री किसे बना रहे हैं?

"यह सिर्फ़ खेल है। राजेन के राजा बनने में हर्ज क्या है? बाद में तुम्हारी भी राजा बनने की बारी आएगी।" -इस कथन से बच्चों के खेल की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

राजेन : जितेन को मैं अपना मंत्री बनाऊँगा।

मति : और सेनापति?

राजेन : तुम बनोगे?

मति : और न्यायाधीश कौन बनेगा?

राजेन : इसके लिए अपना उपेन है।

मति : और बाकी बचे लड़के?

राजेन : वे सभी सैनिक बनेंगे।

मति : ठीक है, खेल शुरू हो। सैनिक लोग, तुम सब कतार में खड़े हो जाओ। महाराज को सलाम करो। कहो महाराज राजेंद्र की जय हो।

(दूसरा दृश्य)

राजा : सेनापति, तुमसे मैं काफ़ी नाराज़ हूँ।

सेनापति : ऐसी क्या गलती हुई महाराज?

राजा : तुममें किसी बात का जोश नहीं रहा।

सेनापति : आज्ञा दीजिए महाराज! मेरे लिए आपकी इच्छा ही सब कुछ है।

राजा : सेनापति बनने के बाद से अभी तक तुमने किसी लड़ाई की तैयारी नहीं की है।

सेनापति : महाराज किससे लड़ें? कोई दुश्मन तो है ही नहीं।

राजा : दुश्मन नहीं है? तो फिर दुश्मन बनाओ। तुम्हें खजाने से अच्छे खासे पैसे मिलते हैं और तुम्हारे सैनिक खाली बैठे-बैठे उकता रहे हैं। अगर बाहरी दुश्मन उन्हें न मिले तो किसी दिन वे मुझपर ही हमला करने आ जाएँगे। सैनिको!

एक सैनिक : आज्ञा दीजिए महाराज।

राजा : अगर तुम्हें लड़ाई करनी पड़े तो कैसा लगेगा?

बाकी सैनिक : लड़ाई! फिर तो बड़ा मज़ा आएगा।

राजा : ठीक कहा, मज़े की बात ही है। सेनापति!

सेनापति : आदेश दीजिए, महाराज!

राजा : कोई दुश्मन ढूँढ़ निकालो। उसके बाद ही लड़ाई शुरू होगी।

(राजा का प्रस्थान। हेम और जनता का प्रवेश)

सेनापति : साथियो, क्या तुममें से कोई ऐसा है जो महाराज से लड़ने के लिए राजी हो?

जनता : जी नहीं!

सेनापति : क्या एक भी नहीं?

जनता : हम किसीसे डरते नहीं। लेकिन हम महाराज से लड़ना नहीं चाहते!

''हम किसीसे डरते नहीं। लेकिन हम महाराज से लड़ना नहीं चाहते।'' यहाँ जनता के किस मनोभाव का परिचय मिलता है?

सेनापति : मगर हेम, तुमने महाराज का अपमान किया है। तो फिर तुम्हारे साथ ही लड़ाई हो।

हेम : मगर मैंने किस तरह महाराज का अपमान किया?

सेनापति : हमारे महाराज जब तुम्हारे मकान के सामने से गुज़र रहे थे, उस वक्त तुम खिड़की के पास खड़े होकर जंभाई ले रहे थे।

तीनों सैनिक : जंभाई ले रहा था। हा हा हा!!!

जनता : जंभाई लेना तो भयंकर बात है। इतना साहस? इससे बड़ा अपमान और क्या होगा?

हेम : मगर राजा बनने के बाद तो महाराज एक बार भी हमारे घर के सामने से नहीं गुज़रे हैं।

सेनापति : मगर भैया, क्या तुम दिल पर हाथ रखकर कह सकते हो कि तुमने कभी जंभाई नहीं ली।

हेम : तो मुझे मान ही लेना पड़ेगा कि मैंने ज़रूर कभी जंभाई ली होगी।

सेनापति : शाबाश! अब तुमने बहादुरों की जैसी बात कही।

जनता : इसे कहते हैं राजा का एकदम योग्य शत्रु। ठीक है न?

सभी सैनिक: तुमसे लड़ाई करके ज़रूर मज़ा आएगा।

सेनापति : चलो सैनिको! इस महान युद्ध के लिए तैयार हो।

जनता : जय राजाधिराज राजेंद्र की जय।

(तीसरा दृश्य)

(सेनापति का प्रस्थान । न्यायाधीश का प्रवेश)

जनता : माननीय न्यायाधीश महोदय! हम लोग जानना चाहते हैं कि हेम के साथ महाराज की यह जो लड़ाई हो रही है वह कहाँ तक उचित है?

न्यायाधीश : अरे ज़रा इसकी बात सुनो। वे तो राजा हैं।

जनता : इसीलिए तो वे न्यायधर्म के पालनहार होंगे।

न्यायाधीश : न्याय-अन्याय तो राजा ही जानते हैं। हम लोग क्या कर सकते हैं?

जनता : हम समझते हैं कि जब तक महाराज न्याय की राह पर चलेंगे तब तक वे हम लोगों के राजा बने रहेंगे।

न्यायाधीश : लेकिन राजा की इच्छा के सामने हमें सिर झुकाना ही पड़ेगा।

जनता : अगर वह इच्छा अन्याय हो, अधर्म हो तब भी?

न्यायाधीश : हाँ तब भी।

जनता : क्यों?

न्यायाधीश : बड़े आश्चर्य की बात है। जानते नहीं कि महाराज के पास काफी बड़ी फ़ौज की ताकत है?

जनता : महाराज को अदालत में बुलाने का आदेश दीजिए।

न्यायाधीश : महाराज को अदालत में बुलाना पड़ेगा?

जनता : अगर आप न्यायाधीश का कर्तव्यपालन नहीं कर सकते तो फिर आपका कोई फ़ैसला हम नहीं मानेंगे।

न्यायाधीश : तुम सबकी बातें न्याय संगत हैं। महाराज को बुलवा भेजने की अब जरूरत नहीं। वे खुद ही इधर आ रहे हैं।

(राजा का प्रवेश)

राजा : यहाँ भीड़ क्यों लगी है? तुम लोगों को क्या चाहिए?

जनता : हमें न्याय चाहिए महाराज।

राजा : इसके लिए अदालत है। वहाँ जाने पर न्याय के लिए सोचना नहीं पड़ेगा।

जनता : माननीय न्यायाधीश से जानने आए हैं कि हेम के विरुद्ध महाराज की लड़ाई क्या उचित है?

राजा : उचित? राजा कभी अन्याय नहीं कर सकते।

जनता : राजा जब अन्याय करते हैं, फिर वे राजा नहीं रहते।

राजा : तुम लोग कड़ी बातें कह रहे हो। इसका परिणाम सोच लो।

जनता : राजा कभी अन्याय नहीं करते, इस बात का मतलब आप भी सोच लीजिए, महाराज हम सविनय जानना चाहते हैं कि हेम का अपराध क्या है?

राजा : इसको तो मैं ठीक-ठीक से बता नहीं सकता। जहाँ तक मुझे याद है कि एक दिन राजमहल का हाथी जब घूमने निकला था, ठीक उसी वक्त हेम ने उसके सामने थूक दिया था। इसे सभी ने देखा है।

जनता : राजा के कानून में अगर दंड देने लायक हो तो अदालत में हेम पर मुकदमा क्यों न चलाया जाए।

राजा : यानि कि लड़ाई के आनंद और उल्लास से तुम लोग मुझे अलग करना चाहते हो।

'यानि कि लड़ाई के आनंद और उल्लास से तुम लोग मुझे अलग करना चाहते हो?" -लड़ाई से आनंद और उल्लास का अनुभव करने वाले राजा पर आपका विचार क्या है?

जनता : इसीलिए कि लड़ाई अन्याय है।

राजा : लेकिन हमें इसकी बेहद ज़रूरत है।

जनता : जरूरत! क्यों?

राजा : खाली बैठे-बैठे हमारे सैनिक लड़ना भूलते जा रहे हैं।

जनता : तब तो हम लोग हेम की तरफ हैं। चलो भाई, चलकर हेम के हाथ मज़बूत करें।

(सब जाते हैं)

(सेनापति का प्रवेश)

राजा : तुम परेशान नज़र आ रहे हो।

सेनापति : जी महाराज, सारी बातें सुनने पर आप भी परेशान हो जाएँगे।

राजा : ऐसी क्या बात है?

सेनापति : जिस कारण से यह लड़ाई लड़ी जानी है, वे उसे ठीक नहीं समझते।

राजा : इससे तो यही साबित होता है कि लड़ाई के कारण का प्रचार करने में तुमने ध्यान नहीं दिया था।

सेनापति : उधर लड़ाई चल रही है। सबसे पहले मुझे वहाँ पहुँचना होगा।

राजा : ऐसा ही करो। पर याद रखना, विद्रोहियों को माफ़ नहीं किया जाएगा।

(एक सैनिक का प्रवेश)

सैनिक : सेनापति जी, हम लोग हार गए।

सेनापति : हार गए? क्या कहते हो? अभी तो लड़ाई शुरू ही हुई थी।

सैनिक : हमारे लोग बड़ी संख्या में भाग रहे हैं।

राजा : जाओ, जाकर उनसे कहो जो भागेगा नहीं उसे इनाम दिया जाएगा। उसका राजकीय सम्मान होगा।

(सैनिकों के साथ हेम का प्रवेश)

हेम : आप बंदी हैं।

राजा : सावधान हेम! यह मत भूलो कि मैं राजा हूँ।

हेम : राजा का अधिकार आपने खो दिया है। जनता के दरबार में आप अपराधी हैं। उन्हींके फैसले का पालन करने आया हूँ।

राजा : अपने जिंदा रहते मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

(जनता का प्रवेश)

जनता : पापी राजा का नाश हो।

राजा : सेनापति, तुम्हारे सामने ऐसा अत्याचार! तुम्हारी, महाराज का इस तरह अपमान करने की हिम्मत!

सेनापति : आज मेरे पास कोई अधिकार नहीं है महाराज!

राजा : न्यायाधीश! ऐसे बदमाशों को तुम सज़ा क्यों नहीं देते?

न्यायाधीश : इसलिए कि न्याय इन्हींके हाथ में है। और इनके साथ पूरी सेना भी है। आप भी अब खामोश

रहिए। राजमुकुट उतार दीजिए। जनता की भीड़ में मिल जाइए।

'जनता की भीड़ में मिल जाना' -इसका मतलब क्या है?

राजा : तो लड़ाई खतम हो गई? मगर इससे क्या हुआ? अदालत तो है ही। वहाँ तो मैं अपनी बात रख सकता हूँ। मेरी राजसभा के चारण अदालत में मेरी ओर से ऐसा भाषण देंगे कि मेरी नीति ही ठीक है।

न्यायाधीश : राजचारण की चापलूसी सुन-सुनकर जनता के कान झनझना रहे हैं।

राजा : मुझे पता है, नमक का गुण वह गाएगा ही। समय आते ही मैं राजचारण को पुरस्कृत करूँगा।

न्यायाधीश : राजचारण ने कहा है कि सिर्फ मुकुट छीन लेने से ही नहीं चलेगा।

राजा : यह क्या कहते हो? तब तो सचमुच मेरे सामने खतरा है। मैं अपने दरबारी कवि की राय जानना चाहता हूँ।

न्यायाधीश : दरबारी कवि अब विजयी जनता की गौरव गाथा लिख रहा है।

राजा : तो आओ मित्र हेम, तुम्हें बधाई! धन्य तुम्हारा साहस। जाने के पहले तुम्हें दो एक सलाह देना चाहता हूँ। तुम राजचारण के पद को खतम कर देना। अब मैं विदा लेता हूँ साथियो!

लड़ाई के बिना ही राजा ने अपना अधिकार जनता को सौंप दिया। यह कैसे संभव हो पाया?

संबंध पहचानें और मिलान करके लिखें :

क्या कहा?

- राजा की इच्छा के सामने हमें सिर झुकाना ही पड़ेगा।
- लड़ाई के आनंद और उल्लास से तुम लोग मुझे अलग करना चाहते हो।
- अगर आप न्यायाधीश का कर्तव्यपालन नहीं कर सकते तो फिर आपका कोई फ़ैसला हम नहीं मानेंगे।
- मगर राजा बनने के बाद तो महाराज एक बार भी हमारे घर के सामने से नहीं गुज़रे हैं।
- आज्ञा दीजिए महाराज! मेरे लिए आपकी इच्छा ही सब कुछ है।

किसने कहा?

हेम

सेनापति

राजा

जनता

न्यायाधीश

इससे क्या समझा

- न्याय दिलाने में असमर्थ व्यवस्था को चुनौती।
- युद्‌ध में भी आनंद का अनुभव करने वाला शासकमन।
- आदेशों का अंधा अनुसरण।
- अधिकारी के प्रति वफ़ादारी।
- शासन के प्रति जनता की आलोचना।

रेखांकित पदबंध पर ध्यान दें। पदबंधों का अर्थ पहचानें :

न्यायाधीश : राजचारण की चापलूसी सुन-सुनकर जनता के **कान झनझना रहे** हैं।

यह संवाद पढ़ें और छूटे परसर्ग पहचानें :

न्यायाधीश : राजचारण चापलूसी सुन-सुनकर जनता के कान झनझना रहे हैं।

राजा : मुझे पता है, नमक गुण वह गाएगा ही।

कोष्ठक से उचित परसर्ग चुनकर रिक्त स्थान भरें : (का, के, की)

- नाटक .... पात्र मंच पर आते हैं।
- राजा .... वेश-भूषा सुंदर थी।
- बच्चों .... नाटक जोशीला था।

टिप्पणी लिखें :

'राजा और विद्रोही' नाटक का राजा आपको कैसे लगा? राजा की चरित्रगत विशेषताओं का परिचय देते हुए टिप्पणी लिखें।

चलो, हम 'राजा और विद्रोही' नाटक का मंचन करें :

मंचन के पूर्व ये तैयारियाँ करें :

- दल का गठन करें।
- निर्देशक को चुनें।
- पात्रों का चयन करें।
- आवश्यक सामग्रियों की सूची बनाएँ।
- पात्रों की वेश-भूषा निश्चित करें।
- पात्रों के चाल-चलन के निर्देश तैयार करें।
- संवाद की योजना बनाएँ।
- मंच की रूपरेखा तैयार करें।

रबींद्रनाथ ठाकुर

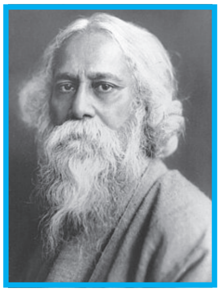

जन्म : 07 मई 1861

मृत्यु : 07 अगस्त 1941

रबींद्रनाथ ठाकुर का जन्म कोलकत्ता में हुआ। बचपन से ही कविता, छंद और भाषा में उनकी अद्‌भुत प्रतिभा का आभास लोगों को मिलने लगा था। टैगोर ने अपने जीवनकाल में कई उपन्यास, निबंध, लघु कथाएँ, यात्रावृत्त, नाटक और सहस्रों गाने भी लिखे हैं। गीतांजलि उनकी बहुचर्चित रचना है।

अमर गोस्वामी

जन्म : 28 नवंबर 1945

मृत्यु : 28 जून 2012

अमर गोस्वामी हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार तथा उपन्यासकार हैं। वे 'मनोरमा' और 'गंगा' जैसी देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं से लंबे समय तक जुड़े रहे थे। अमर गोस्वामी साहित्यिक संस्था 'वैचारिकी' के संस्थापक थे। उन्होंने कई साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

मदद लें...

विद्रोही	-	क्रांतिकारी
साबित होना	-	തെളിയിക്കപ്പെടുക, to be proven, ಸಾಬೀತಾಯಿತು, நிரூபிக்கப்படுதல்
जबड़ा	-	താടിയെല്ല്, jaw, ದವಡೆ, தாடை எலும்பு
भुर्ता बनाना	-	(मार-मार कर) कचूमर निकालना, अत्यधिक मारना
बत्तीसी तोड़ देना	-	മുപ്പത്തി രണ്ട് പല്ലും അടിച്ചുകൊഴിക്കുക, knock out all teeth, ಮೂವತ್ತೆರಡು ಹಲ್ಲುಗಳನ್ನು ಉದುರಿಸು, முப்பத்தி இரண்டு பற்களையும் அடித்து கீழே போடுவேன்
झगड़ा	-	कलह
हर्ज़	-	आपत्ति
बारी	-	अवसर
न्यायाधीश	-	जज
कतार	-	पंक्ति
खाली बैठना	-	बेकार बैठना
उकताना	-	ऊबना
आज्ञा	-	आदेश
जंभाई	-	കോട്ടുവായ, **yawn,** ಆಕಳಿಸು, கொட்டாவி
दिल पर हाथ रखकर कहना	-	ईमानदारी से कहना
बहादुर	-	वीर
फ़ौज	-	सेना

अदालत - न्यायालय

पालनहार - संरक्षक

थूक देना - തുപ്പുക, to spit out, ಉಗುಳುವುದು, துப்புதல்

दंड देने लायक - सज़ा देने योग्य

मुकदमा - കേസ്, case, வழக்கு

बेहद ज़रूरत - अत्यंत आवश्यकता

हाथ मज़बूत करना - शक्ति प्रदान करना

सावधान - सतर्क

फ़ैसले का पालन - निर्णय का अनुसरण

जनता की भीड़ - जनसमुदाय

राजचारण - राजा की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करनेवाला

चापलूसी - झूठी प्रशंसा

कान झनझनाना - चैन खो जाना

नमक का गुण गाना - ഉണ്ട ചോറിന് നന്ദി കാണിക്കുക, to be grateful, ಉಂಡ ಅನ್ನಕ್ಕೆ ಕೃತಜ್ಞತೆತೋರಿಸು, உப்பிட்டவரை உள்ளளவும் நினை

छीन लेना - अपहरण करना

खतरा - आपदा

खत्म कर देना - समाप्त कर देना

विदा लेना - വിടവാങ്ങുക, say goodbye, ವಿದಾಯ ಹೇಳು, விடைபெறுதல்

कविता

बोनज़ाई

सुधा उपाध्याय

तुमने आँगन से खोदकर
मुझे लगा दिया सुंदर गमले में
फिर सजा लिया घर के ड्राइंग रूम में
हर आने जाने वाला बड़ी हसरत से देखता है
और धीरे-धीरे मैं बोनज़ाई में तब्दील हो गई

मौसम ने फिर करवट ली
मुझमें लगे फल फूल ने तुम्हें फिर डराया
अबकी तुमने मुझे उखाड़ फेंका घूरे पर
आओ देखकर जाओ
यहाँ मेरी जड़ें और फैल गई हैं।

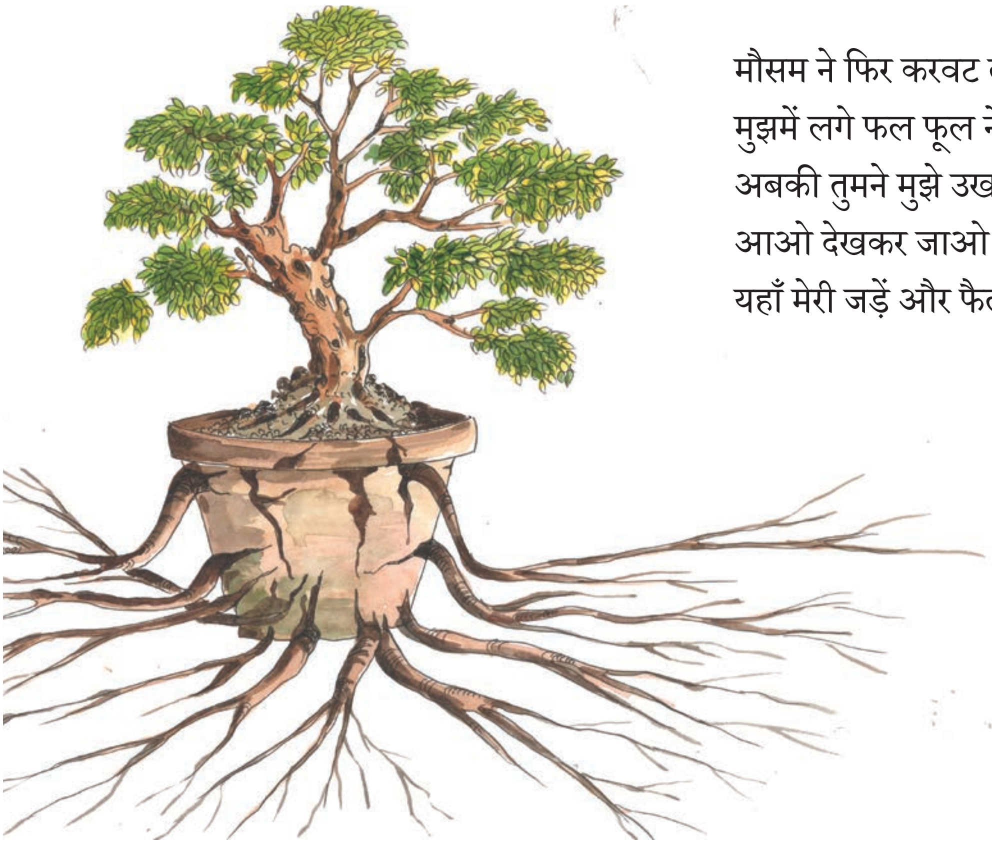

कविता पढ़ते समय इन प्रश्नों से गुज़रें :

- आंगन से खोदकर गमले में लगा देने से पौधे में क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं?
- ड्राइंग रूम में बोनज़ाई को अतिथि लोग आश्चर्य से क्यों देखते होंगे ?
- 'धीरे-धीरे मैं बोनज़ाई में तब्दील हो गई'-इससे आपने क्या समझा?
- 'मुझमें लगे फल फूल ने तुम्हें फिर डराया'- इससे आपको क्या आशय मिलता है ?
- बोनज़ाई में फल फूल लगने पर मालिक ने उसे घूरे पर क्यों फेंक दिया ?
- 'घूरे पर बोनज़ाई की जड़ें और फैल गईं' का मतलब क्या है ?
- कविता से विशेष अर्थ को सूचित करने वाले शब्दों को पहचानें।

जैसे : बोनज़ाई, आँगन

पृष्ठ 92 का चित्र ध्यान से देखें, नीचे दिए प्रश्नों पर विचार करें :

- बोनज़ाई किन-किन के प्रतीक हो सकते हैं?
- क्या, बोनज़ाई किसी विशेष अर्थ की सूचना देता है?

आस्वादन टिप्पणी लिखें :

बोनज़ाई कविता की रूपपरक और आशयपरक विशेषताओं का परिचय देते हुए आस्वादन टिप्पणी लिखें।

कक्षा के कविता पाठ कार्यक्रम में भाग लें।

कविता पाठ का वीडियो बनाएँ।

सुधा उपाध्याय

जन्म : 29 नवंबर 1972

सुधा उपाध्याय हिंदी की आज की लेखिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ। इसलिए कहूँगी मैं, बोलती चुप्पी, पाठ-पुनर्पाठ, 'औपन्यासिक चरित्रों में वर्चस्व की राजनीति :छठवें दशक के बाद' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। शीला सिद्धांतकर सम्मान, अमर सरस्वती सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

मदद लें...

खोदना	-	കിളച്ചെടുക്കുക, to dig and pull out, ಅಗೆದು ತೆಗೆಯುವುದು, கிளறிவிடுதல்
गमला	-	പൂച്ചട്ടി, flowerpot, ಮಣ್ಣಿನ ಮಡಕೆ, மண்சட்டி
सजा लिया	-	अलंकृत किया
ड्राइंग रूम	-	സ്വീകരണ മുറി, drawing room, ಸ್ವಾಗತ ಕೊಠಡಿ, வரவேற்பறை
बड़ी हसरत से	-	लालसा के साथ
तब्दील हो जाना	-	पूरी तरह बदल जाना
करवट लेना	-	बदल जाना
अबकी	-	इस वक्त
उखाड़ फेंकना	-	പിഴുതെറിയുക, pull out and throw away, ಕಿತ್ತು ಬಿಸಾಡುವುದು, பிடுங்கி எறிதல்
घूरे पर	-	कूड़े-कचरे में